website: www.pawanprawah.com
पवन प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

तीर्थ एवं श्रद्धा का स्थानिक विसरण

हम पूर्व अंक-6 मे विश्व के सबसे बड़े कुम्भ महोत्सव के बारे मे वैज्ञानिक कारणो को जानने हेतु एस.एम.एस. द्वारा गठित समूह व उसके अध्ययन के निष्कर्स, कुम्भ महोत्सव के धार्मिक पक्ष तथा राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता में प्रयागराज तीर्थ स्थल की भूमिका के विषय मे जानकारी प्राप्त की। इस अंक मे हम तीर्थ एवं श्रद्धा का स्थानिक विसरण को जानने का प्रयास करेंगे।

भाग-07

गतांक से आगे

विसरण से तात्पर्य केन्द्र से किसी तत्व का प्रसरण है। भूगोल में यह दो अर्थों में प्रयुक्त होता है। क्षेत्रीय प्रसरण एवं पुनः अवस्थापन (Cliff A.D., Haggett Page-1981)। श्रद्धा के स्थानिक विसरण में किसी केन्द्र से सम्बन्धित श्रद्धा के आयाम का फैलाव होता हैं। यह प्रक्रिया दो प्रकार से सम्पन्न होती है। प्रथम में केन्द्र से पण्डा, पुरोहितों एवं सन्तों द्वारा प्रवास के दौरान क्षेत्रों में जाकर तीर्थ की महिमा का वर्णन से प्रसरण होता है और दूसरे में तीर्थ में आये लोगों द्वारा अपने आवास में पहुंचने पर तीर्थो के धार्मिक विश्वासों के विसरण-प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। अतः यह कार्य अबाध रूप से चलता रहता है। धार्मिक विश्वासों के विसरण प्रक्रिया से एक स्थान के लोग दूसरे स्थान के लोगों के करीब आते हैं और उनमें आपसी समझ बढ़ती है। धार्मिक विश्वास के विसरण तंत्र के लिये निम्नलिखित तथ्य उत्तरदायी होते हैं (Bharadwaj S.M. 1973, Page-202)।

तीर्थ यात्रियों एवं उनके 'सम्पर्क क्षेत्र' के मध्य आवृत्ति।

यात्रियों के गमनागमन तथा विस्तार।

यात्रियों के बीच का सामाजिक अवरोध जो संचार को प्रभावित करता है।

तीर्थो का सम्भाव्य के लिये ग्रहणशीलता।

व्यक्तियों को तीर्थयात्रा करने के उत्तरदायी पूर्व प्रतिबन्ध।

तीर्थ केन्द्रों में निवास करने वाले सन्त, पण्डा, पुजारियों के संगठन की क्षमता जो सम्भाव्य तीर्थयात्रियों की तीर्थयात्रा हेतु प्रेरित करें।

अभीष्ट पवित्र स्थलों पर पण्डा, पुजारियों द्वारा प्रयुक्त विधि जो तीर्थ की विश्वसनीयता में वृद्धि करती है।

प्रसिद्ध महात्माओं की उपस्थिति एवं अनुपस्थिति।

तीर्थ एवं तीर्थ यात्रियों की अन्तक्रिया

इसमें विभिन्न तीर्थ केन्द्रों में उसके प्रभाव प्रदेश में आने वाले तीर्थ यात्रियों के बीच में अन्तक्रिया होती है। जिस तीर्थ का प्रभाव प्रदेश जितना ही अधिक होता है, उन तीर्थो में तीर्थयात्रियों के बीच उतना ही अधिक अन्तर्क्रिया के माध्यम से देश के अति दूरस्थ केन्द्रों/स्थानों के बीच वैचारिक आदान प्रदान कर राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का प्रयास करते हैं। धार्मिकता, भारतीय एकता की संकल्पना का एक अनिवार्य तथ्य है (Bharadwaj S.M. 1973, Page-371)। इस प्रकार तीर्थयात्रा न केवल भारतीय राष्ट्रीय एकता को बल प्रदान करती है बल्कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में स्थानिक एकता लाती है (James, D.M.C. Namara, 1995 Page- 371)।

प्रयाग एवं राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक एकता

प्रयाग का सांस्कृतिक व्यक्तित्व सदा ही चुम्बकीय रहा है। युग-युगों में अपनी मूल धार्मिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं तथा मूल्यों के सम्वर्द्धन एवं समुन्नयन की दिशा में कवियों, लेखकों, चिन्तकों एवं बुद्धि जीवियों की खान इस तीर्थराज का भारतीय इतिहास के पृष्ठों में सदा ही मुखरित रहेगा। कुम्भ पर्व के अवसर पर एकत्र विशाल जनसमुदाय प्रयाग की राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आकर्षण-शक्ति का ज्वलन्त प्रतीक है। प्रयाग के राष्ट्रीय एकता के वाहक तत्वों में प्रयाग के तीर्थयात्री, पण्डा, पुजारी, प्रसिद्ध गुरू, कल्पवासी एवं पर्यटक प्रमुख हैं। इसलिए इनका विश्लेषण करना आवश्यक है।

1) तीर्थयात्री

प्रयाग उच्च स्तरीय तीर्थ केन्द्र के रूप में माना जाता है (Bharadwaj, S.M. 1973)। यहां पर विशाल हिन्दू परिक्षेत्र से तीर्थयात्री आते हैं। हिन्दू परिक्षेत्र उसे कहते हैं जहां पर हिन्दू धर्म प्रभावकारी होता है (Meanig, Donald, W. 1965, Page-215)। प्रयाग में तीर्थयात्री किस क्षेत्र से कितने आते हैं, इस हेतु शोधकर्ता (ओझा, रमेशचन्द्र, 2002) ने 2000 यात्रियों का सर्वेक्षण कर ज्ञात करने का प्रयास किया है। इसमें यह स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है कि सबसे अधिक तीर्थयात्री उत्तर प्रदेश में हैं जिनकी संख्या लगभग 1490 हैं। इसके बाद मध्य प्रदेश (छत्तीसगढ़ सहित) का स्थान आता है, यहाँ से 200 यात्री आते हैं। बिहार से 73 तीर्थयात्री, पं0 बंगाल से 30 एवं महाराष्ट्र से 40, तमिलनाडु से 16, राजस्थान से 15, उड़ीसा से 12, कर्नाटक से 8, हिमाचल प्रदेश से 12, पंजाब एवं हरियाणा से 25 तथा नेपाल से 9 तीर्थयात्री आये हैं। इससे स्पष्ट है कि तीर्थयात्रियों की संख्या मुख्यतः दो बातों पर निर्भर करती है-

प्रथम हिन्दू धर्म के प्रभाव वाले क्षेत्र तथा द्वितीय प्रयाग से दूरी एवं आवागमन के साधन। हिन्दू धर्म प्रभाव वाले क्षेत्रों से यात्रियों की संख्या अधिक है किन्तु अन्य धर्म वाले क्षेत्रों से अपेक्षाकृत संख्या कम है। किन्तु देश के समस्त क्षेत्रों से यात्री प्रतिवर्ष आते रहते हैं।

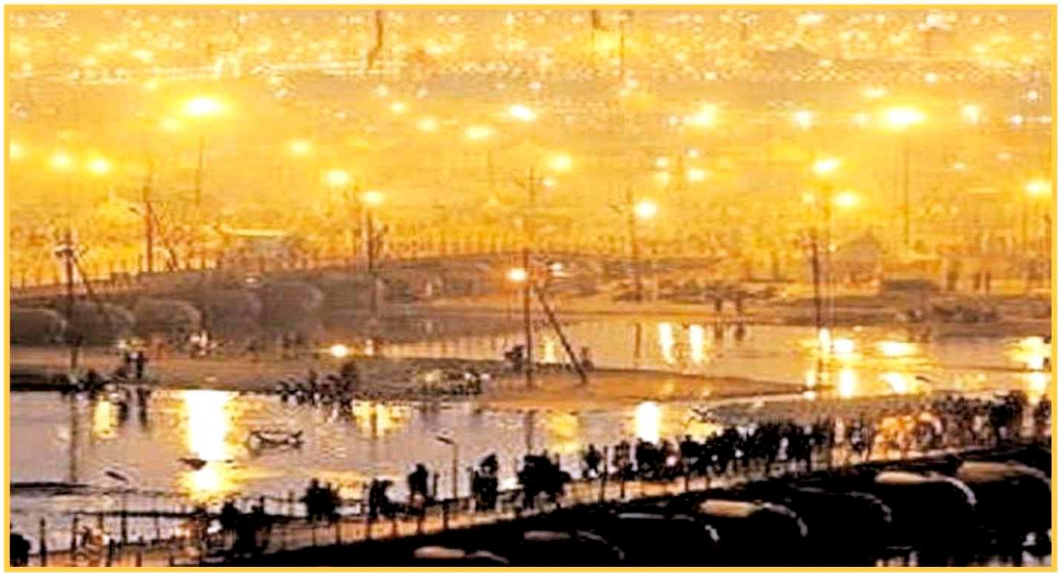

2) तीर्थ पुरोहित/पण्डा

प्रयाग के प्रत्येक तीर्थयात्री का एक विशिष्ट तीर्थ पुरोहित होता है। तीर्थयात्री और पुरोहित का सम्बन्ध गुरू-शिष्य परम्परा का द्योतक है। यात्री के धार्मिक रूप माने जाने वाले इन प्रयागवालों (पुरोहितों) को ही त्रिवेणी क्षेत्र में दान लेने का एकमात्र अधिकार है। जिला गजेटियर में इलाहाबाद के अनुसार- ''जो यात्री प्रयाग में आता है उसका समस्त प्रकार का धार्मिक कर्मकाण्ड प्रयागवाल ही करता है। सर्वप्रथम वेणीमाधव भेट तत्पश्चात् स्नान और फिर पिण्डदान, शैय्यादान, गोदान, भूमिदान और अन्य में प्रयागवाल तीर्थ यात्री को सुफल देता है।'' समस्त प्रकार के दान, उपदान, प्रयागवाल द्वारा कराये जाते हैं। यात्रियों के लेख, उनके परिवार की वंशावली उस तीर्थ पुरोहित की बही में मिलता है। अन्य व्यावसायिक लोग तीर्थयात्रियों के साथ अन्य व्यवहार करते हैं और अपयश मिलता है, प्रयागवालों को। क्योंकि प्रयाग तीर्थ से उसी प्रकार जुड़ा है जिस प्रकार एक कड़ी से दूसरी कड़ी।

लाखों की संख्या में आने वाले इन तीर्थयात्री/कल्पवासियों के ठहरने की व्यवस्था प्रयागवाल ही करता है। प्रयागवाल प्रशासन से शुल्क पर भूमि प्रांप्त करता है, उस पर टेंट या कुटिया की व्यवस्था करता है। इसमें अपने यात्रियों (यजमानों) को ठहराता है और इससे दान स्वरूप जो मिलता है उसी से अपनी जीविका निर्वाह करता है।

प्रयागवालों के यजमान क्षेत्र तथा स्नान दान के आधार पर चलते है और यह अपने यजमानों की वंशावली संरक्षित रखते हैं। यजमान इनकी मोटी बहियों में अपने पूर्व पुरखों के हस्ताक्षर आदि देखकर प्रसन्न होते हैं। यह अपने क्षेत्र के यजमानों की वंशावली तत्काल खोज लेते हैं।

प्रयागवाल दो प्रकार के होते हैं- पीढ़िया और परदेशी। पीढ़िया मूल प्रयागवाल है और परदेशी उनके सम्बन्धी जो कालान्तर में आकर बस गये। प्रयागवालों को अपने यजमान टिकाने के लिए मामूली किराये पर भूमि दी जाती है तथा संगम के निकट प्रसार क्षेत्र में कर्मकाण्ड व दान पुण्य करने के लिये गंगा पट्टी व यमुना पट्टी में तख्त रखने के लिए स्थान दिया जाता है। यजमानों को टिकाने के लिये भूमि तथा संगम के निकट प्रयागवाल तख्त हेतु भूमि का आवंटन प्रयागवाल सभा के माध्यम से होता है और वे ही स्थान तथा क्रम निर्धारित करते हैं। प्रशासन द्वारा भूमि निर्धारित कर आवंटित कर दी जाती है और किसे कहाँ, कितनी भूमि मिलेगी इसका निर्णय प्रयागवाल सभा स्वयं करती है। इस वर्ष भी ऐसी शिकायत नहीं मिली कि प्रयागवाल अपने निर्दिष्ट स्थानों के अतिरिक्त घूमकर कर्मकाण्ड आदि कराएं। इन प्रयागवालों में से कुछ के पास बेनीदान आदि के लाइसेंस होते हैं। इस वर्ष गोदान का लाइसेंस समाप्त कर दिया गया जिसके कारण काफी सुविधा हुई और प्रयावालों और घाटियों के अतिरिक्त बाहरी व्यक्ति संगम क्षेत्र बछिया लेकर न घूम सके। पहले पानी में भी खड़ी करके गोदान कराये जाने की शिकायत मिलती थी जिनसे ट्रैफिक में बाधा तो होती ही थी, गरीब बछिया को भी बहुत कष्ट होता था। इस वर्ष ऐसी कोई शिकायत नहीं मिली।

प्रयागवाल तख्तों की संख्या निश्चित है। प्रयागवाल यह प्रयास करते हैं कि इन पर छोलदारियां आदि लगाकर यात्रियों को टिका लें। इस वर्ष भी प्रयास किये गये परन्तु उसे हटवा दिया गया। प्रयागवाल अपने तख्त पर बड़ा बहियों का बक्सा रखते हैं तथा एक ऊँचे बांस पर अपने निशान का झण्डा लगाते हैं। कुछ पण्डे झण्डे के स्थान पर टोकरी आदि भी लगाते हैं। प्रत्येक प्रयागवाल का एक निश्चित झण्डा या निशान होता है और उसे ही देखकर तीर्थयात्री अपने प्रयागवाल के पास पहुंचने का प्रयास करते हैं। ये प्रयागवाल अपने पास कुछ गुमास्ते भी रखते हैं जिनका कार्य वस्तुतः ''टूरिस्ट गाईड'' का होता है। यह गुमास्ते रेलवे तथा बस स्टेशनों से यात्रियों व उनके प्रयागवालों के घर तक या मेले में लगे उनके शिविर तक पहुँचाते हैं।

प्रयाग के तीर्थ पुरोहितों के सर्वेक्षण हेतु लगभग 100 प्रसिद्ध तीर्थ पुरोहितों को चुना गया है जिसमें प्रदेश के अनुसार पुरोहितों का सर्वेक्षण किया गया है क्योंकि विभिन्न प्रदेशों के लोग अपने प्रदेश के पुरोहितों के यहाँ निवास करते हैं और ये तीर्थ पुरोहित भी इन्हीं प्रदेशों में जाते हैं। इन पुरोहितों के सर्वेक्षण से स्पष्ट है कि 85 तीर्थ पुरोहित उत्तर प्रदेश, बिहार व मध्य प्रदेश के तीर्थयात्रियों से सम्बन्धित हैं और 5 पुरोहित महाराष्ट्र से सम्बन्धित हैं, 3 मद्रास एवं अन्य शेष दक्षिण भारत से सम्बन्धित तीर्थयात्रियों के पुरोहित हैं। इन पुरोहितों में बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश एवं पं0 बंगाल से सम्बन्धित तीर्थ पुरोहित ही अपने यजमानों के यहाँ जाते हैं जबकि अन्य क्षेत्रों के पुरोहित प्रवास नहीं करते। इनके यहाँ क्षेत्रों से तीर्थयात्री ही आते हैं (प्रयागवाल 103 -104)।

3) प्रसिद्ध गुरू

प्रयाग के प्रसिद्ध गुरुओं में शंकराचार्य से सम्बन्धित तीर्थ यात्रियों का सर्वेक्षण किया गया है। प्रयाग के प्रसिद्ध गुरुओं में शंकराचार्य के दर्शनार्थ ही अधिकांश तीर्थयात्री आते हैं। मेले में अनेक वैरागियों के शिविर भी मिलते हैं। उनके महन्तों, महामण्डलेश्वरों के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। रामानुज, बल्लभ और चैतन्य के शिविर भी लगते हैं और अपने सिद्धान्त तथा साधना का प्रदर्शन तथा प्रचार-प्रसार करते हैं। सन्तों में तुलसीदास, कबीरदास, मलूकदास, रैदास आदि के अनुयायी भी शिविर लगाते हैं।

आधुनिक संतों में रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दयानंद सरस्वती, साईबाबा, देवरहा बाबा और श्री अरविन्द के शिष्य भी शिविर लगाते हैं। शैव और शक्ति मतों के अनुयायी भी अपने-अपने शिविर लगाते हैं। नये संतों में ब्रह्मकुमारी, नारायण महाप्रभु, सच्चाबाबा, बाबा भूतनाथ, पायलट बाबा आदि के शिविर विशेष उल्लेखनीय हैं। अन्य किसी प्रसिद्ध गुरू के अभाव में तीर्थयात्रियों का उद्देश्य किसी गुरू के दर्शन हेतु अत्यल्प है।

कुम्भ के बारे मे अधिक जानकारी अगले अंक में